एक मसीही पत्रिका

सांत्वना

उसने उनसे अन्त तक प्रेम किया

अक्टूबर - नवंबर 2022

केवल निजी वितरण हेतु

सम्पादक मंडल

मुख्य संपादक
अतुल्य पी. मसीह

सह-संपादक
एबी वर्गीस
जैमोन के सैम

सम्पादकीय समिति
शमूएल बी. थॉमस
सैम मैथ्यू
जेम्स पॉल
अमरजीत
बेन्नी चार्लिल

प्रसार प्रभारी
एबी जोसफ

सलाहकार समिति
टी. जे. जोसफ
सेसन अब्राहम
जोसफ वर्गीस

डिज़ाइन और लेआउट
संजय रेड्डी
प्रिंस बी. तोप्पिल

संपादकीय

'सांत्वना' के सभी प्रिय पाठकगणों को मसीही स्नेहाभिवादन!

संसार की वर्तमान परिस्थितियों के कारण आज-कल हमें बार-बार बच्चों, युवाओं और बड़े – बुजुर्गों से भी यह सुनने को मिलता है कि अब उनका मन पढ़ाई, व्यवसाय, नौकरी इत्यादि बातों में नहीं लगता। अधिक दुख तब होता है जब हम सुनते हैं कि हमारे मसीही बच्चों, जवानों, बुजुर्गों तथा भाई-बहनों से यह सुनने को मिलता है कि अब उनका मन बाइबल पढ़ने और अध्ययन करने, प्रार्थना करने, नियमित रूप से कलीसियाई संगति में जाने, अपनी गवाही देने जैसे आत्मिक बातों में नहीं लगता। शायद वे खुलकर ऐसा न कह पाएं, परंतु उनके हाव-भाव को देखकर हम इस बात को समझ जाते हैं। हमारे अपनों की आत्मिक बातों के प्रति उदासीनता हमें चिंतित करती और निराशा की ओर ले जाती है।

आत्मिक बातों में "मन नहीं लगने" की इस वास्तविकता का सामना करने तथा इसके निदान के लिए परमेश्वर का वचन हमें आज्ञा देता है, "सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है।" सबसे पहले, यह जानना जरूरी है कि हमारा मन कहां है ... यह किसकी ओर लगा हुआ है।

बाइबल मन के बारे में बहुत ही महत्वपूर्ण बातों को बताती है। यह हमें बताती है कि जो हमारे मनों में है उसके अनुसार ही हमारा जीवन व्यतीत होगा। यह हमारे लिए कितनी महत्वपूर्ण चेतावनी और शिक्षा है! हमें बताया गया है कि, "जहाँ तेरा धन है, वहाँ तेरा मन भी होगा" (मत्ती 6:21)। जब हम बाइबल में दिए गए विभिन्न व्यक्तियों का चरित्र-अध्ययन करते हैं, तब हम अनेक नकारात्मक और सकारात्मक दोनों तरह की हृदय-विदारक घटनाओं को पाते हैं।

हम सभी की आदि माता हव्वा का मन भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के वर्जित फल पर था (उत्पत्ति 3:6)। लूत की पत्नी का मन सदोम से बंधा हुआ था। आकान का मन यरीहो की वर्जित लूट पर था। गाद, रूबेन, और मनश्शे के आधे गोत्र ने, यरदन के पूर्व की ओर हरे-भरे चरागाहों को देखकर, प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करने की बजाय इन भू-भागों को अपनी निज-भूमि होने के लिए बिनती की। इससे स्पष्ट होता है कि

उनका मन वास्तव में कहाँ था।

इसके विपरीत, अब्राहम ने अपने कुटुंब और अपनी मातृभूमि को छोड़ दिया जब परमेश्वर ने उसे दूसरे देश में जाने को कहा, "क्योंकि वह एक स्वर्गीय नगर की खोज में था!" अपने पति इसहाक के साथ रहने के लिए रिबका ने उत्सुकता से अपने परिवार और कुटुंब को पीछे छोड़ दिया। पतरस, अन्द्रियास, याकूब और यूहन्ना ने प्रभु यीशु का अनुसरण करने के लिए अपने व्यवसायों और अपने परिवारों को छोड़ दिया, जैसा कि लेवी ने किया था, जिसने प्रभु यीशु द्वारा उसे बुलाए जाने पर तुरंत अपनी चुंगी की चौकी छोड़ दी। उनकी प्रतिक्रियाओं ने प्रदर्शित किया कि उनके मन कहाँ थे।

प्रभु यीशु हमें निर्देश देते हैं कि वे हमारे लिए हमारे घरों, हमारे पदों, हमारे पारिवारिक संबंधों, यहाँ तक कि हमारे अपने प्राणों से भी अधिक महत्वपूर्ण हैं। हमें प्रतिदिन अपना क्रूस उठाना है और अपने प्रभु के पीछे चलना है। हमारे प्रभु ने अपने पिता की इच्छा पूरी करने के द्वारा हमें अपना मन दिखाया है, "जिसने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, क्रूस का दुख सहा" (इब्रानियों 12:2)।

प्रभु हमारे दिलों को जीत लें तथा हमारे मनों में उनके प्रति भक्ति और समर्पण को भर दें ताकि हमारे मन पूर्ण रूप से उनके प्रति समर्पित हो जाएं। "हे परमेश्वर, मुझे जांच कर जान ले! मुझे परख कर मेरे मन को जान ले! और देख कि मुझ में कोई बुरी चाल है कि नहीं, और अनन्त के मार्ग में मेरी अगुवाई कर" (भजन 139:23-24)!

प्रभु की धन्य सेवा में आपका भाई
अतुल्य

एक मसीही पत्रिका

सांत्वना

इस अंक में

1. **उसने उनसे अन्त तक प्रेम किया** - डॉ. कोशी मैथ्यू, मुंबई 1

2. **ब्रेदरेन मण्डली की विशेषतायें (भाग – 3)** - शास्त्री जानसन सी फिलिप 4

3. **आधुनिक मिशनों के जनक : विलियम कैरी - साभार** - कृपानंद, बैंगलोर 6

4. **उत्पत्ति की पुस्तक का परिचय** - इवें. राज कुमार, फिरोजपुर, पंजाब 9

5. **भक्तिपूर्ण चिंतन (यूहन्ना 2:1-11)** - इवें. थॉमस अब्राहम, रायपुर 13

6. **मैं दूसरों के प्रति दयालुता क्यों दिखाऊं?** - तबस्सुम रॉय पेस, भिवाड़ी, राजस्थान 18

7. **असंभव को संभव करनेवाला परमेश्वर** - निर्मल खाण्डेलकर, राजनांदगांव (छ.ग.) 21

8. **परमेश्वर की दृष्टि में हमारा मूल्य! (लूका 12:22-31)** - ज्योति साहू, राजनांदगांव (छ.ग.) 25

उसने उनसे अन्त तक प्रेम किया

डॉ. कोशी मैथ्यू, मुंबई

बैतलहम में प्रभु यीशु मसीह का जन्म परमेश्वर के प्रेम का प्रकटीकरण था। परमेश्वर ने हम से प्रेम किया और हमारे लिए अपने इकलौते पुत्र को दे दिया (1 यूहन्ना 4:9; यूहन्ना 3:16)। इस महान घटना पर स्वर्गदूत आनन्दित हुए, चरवाहों ने जाकर उसे चरनी में देखा, और जितनों ने सुना वे उसके विषय चकित हुए। मरियम ने इन सब बातों को अपने हृदय में रखा और उनके बारे में विचार करती रही (लूका 2:19)। उसका जन्म ऐसी बात है जिस पर हमें साल में केवल एक बार नहीं, वरन हर समय मनन करते रहना चाहिए।

उद्धारकर्ता की पहली रात

बाइबल के विद्वानों का मानना है कि यीशु का जन्म एक चरनी में हुआ था जो "किम्हाम की सराय" (यिर्मयाह 41:17) का एक भाग थी। बाइबल के लेखों के अनुसार यात्री इस स्थान का उपयोग अपने रहने के लिए किया करते थे। क्योंकि बैतलहम एक छोटा नगर था इसलिए वहाँ बहुत सी सरायों के होने की कल्पना नहीं की जा सकती है। संभवतः इस "सराय" को राजा दाऊद ने बनवाया था और बर्ज़िल्लै के द्वारा दाऊद के भटकने के दिनों में दाऊद की सहायता करने के लिए कृतज्ञता दिखाने हेतु बर्ज़िल्लै के पुत्र किम्हाम को दे दिया था (2 शमूएल 17:27-29, 19:37-38)। एक रीति से यूसुफ मरियम को उसके पुरखाओं की जायदाद में ही लेकर आया था, परन्तु फिर भी उनके लिए वहाँ पर जगह नहीं थी। वह अपनों में आया, और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया (यूहन्ना 1:11)।

उद्धारकर्ता की अंतिम रात

उद्धारकर्ता के लिए इस पृथ्वी पर उसकी पहली रात के समय कोई जगह नहीं थी। "उनके लिये सराय में जगह न थी" (लूका 2:7)। शब्द "सराय", जो यूनानी भाषा में काटालुमा अर्थात, आगंतुकों का स्थान है, का प्रयोग नया नियम में केवल तीन बार किया गया है (लूका 2:7; 22:11; मरकुस 14:14)। यह शब्द इब्रानी भाषा के उस शब्द के समान है जिसका अनुवाद यिर्मयाह में 'सराय' किया गया है। हमारे प्रभु ने अपनी अंतिम रात को अपने शिष्यों के साथ बिताने के लिए भी एक आगंतुकों के स्थान,

काटालुमा, को माँगा। परन्तु घर के स्वामी ने उसे ऊपर का एक बड़ा कमरा (एनोजिओन), सारी तैयारी के साथ दे दिया (लूका 22:11-12)। हो सकता है कि उसने उसे फसह के पर्व के लिए किराए पर लिया हो। हमारे उद्धारकर्ता ने अपनी पहली रात से लेकर अंतिम रात मनुष्यों के प्रति परमेश्वर के प्रेम को व्यक्त करते हुए बिताई।

प्रेम उसकी 'संपूर्ण परिपूर्णता' में

ऊपरौठी कोठरी के प्रवचन वाले पवित्रशास्त्र के खण्ड (यूहन्ना अध्याय 13 से 17) में, अगापे शब्द लगभग अट्ठाईस बार आया है; जबकि अध्याय 1 से 12 में यह केवल सात बार प्रयोग हुआ है।

अंतिम दिन की ऊपरौठी कोठरी की घटनाओं का वर्णन आरंभ करते हुए यूहन्ना एक सुन्दर वाक्य के साथ आरंभ करता है, "जैसा प्रेम वह रखता था, अन्त तक वैसा ही प्रेम रखता रहा" (यूहन्ना 13:1)। जिस शब्द (एइसटेलोस) का अनुवाद "अन्त तक" हुआ है, उसका अनुवाद "संपूर्ण परिपूर्णता में" भी किया जा सकता है। उस दिन की समाप्ति पर उसके प्रेम के प्रदर्शन का चरम बिंदु क्रूस पर प्रदर्शित हुआ।

निःसंदेह शिष्यों के प्रति उसके प्रेम का प्रदर्शन ऊपरौठी कोठरी के प्रवचन में पूर्णतः प्रगट है। प्रभु और स्वामी ने, पूर्ण दीनता में, शिष्यों के पाँव धोए। वह जिसके हाथों में पिता ने सब कुछ दे दिया था (13:3), उसने अब शिष्यों के पाँव अपने हाथों में लिए और उन्हें धोया।

उसने यहूदा इस्करियोती सहित सभी शिष्यों से प्रेम किया। अध्याय 13 में यूहन्ना ने यहूदा के प्रति प्रभु के प्रेम को दिखाने के लिए अधिक स्थान दिया है।

उसने यहूदा से प्रेम किया

इसके अनेक प्रमाण हैं कि प्रभु ने कैसे यहूदा को पश्चाताप करने के अवसर दिए। यहूदा ने कभी मसीह को 'प्रभु' कह कर संबोधित नहीं किया; हमेशा उसे स्वामी ही कहा। चेलों में से केवल वही एक 'उद्धार न पाया हुआ' चेला था, जिसने स्वेच्छा से पश्चाताप करके उद्धारकर्ता के पास आना स्वीकार नहीं किया।

हमारे प्रभु ने यहूदा को फसह के पर्व को मनाने के समय में तीन या अधिक अवसर दिए थे।

जब शैतान यहूदा को विश्वासघात करने के लिए उकसाने लगा, तब मसीह ने उसका ध्यान पश्चाताप करने के लिए पवित्रशास्त्र की ओर खींचा (पद 2, 18)। यहाँ प्रभु ने भजन 41:9 से उद्धरित

किया है। इससे पहले पद 10 से 14 में यीशु मसीह यहूदा को इशारा करता है कि वह अभी भी उद्धार नहीं पाया है और अभी भी वह पापी ही है। यहूदा के लिए, मसीह केवल स्वामी ही था, उसका प्रभु नहीं।

जब यहूदा ने अपने मन को कठोर कर लिया, तब मसीह अपनी आत्मा में दुखी हुआ और उसने खुल कर कहा, "मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा" (पद 21)। इन शब्दों ने भी यहूदा में कोई पश्चाताप उत्पन्न नहीं किया।

अन्ततः, यीशु ने अपने प्रेम के चिह्न के रूप में उसे रोटी का टुकड़ा दिया। डॉक्टर एल्फ्रेड एडरशेम के अनुसार, जो एक विख्यात यहूदी व्याख्याकर्ता हैं और फसह के पर्व से संबंधित परंपराओं से परिचित हैं, रोटी का पहला टुकड़ा सदा ही फसह के भोज पर उपस्थित आदरणीय मेहमान को ही दिया जाता है। मेज़बान (परिवार का मुखिया) भुनी हुई भेड़ का एक भाग, अखमीरी रोटी और कुछ कड़ुवे साग-पात लेता था, ये तीनों मिलकर 'रोटी का टुकड़ा' बनाते थे। फिर मेज़बान उसे एक कटोरे में डुबोकर मुख्य अतिथि को देता था, उसके आदर को दिखाते हुए, और इस प्रकार फसह का भोज आरंभ होता था। ऐसा प्रतीत होता है कि उस भोज में यहूदा इस्करियोती को मुख्य अतिथि बनाया गया था।

अपने पापों के लिए पश्चाताप करने और उनका अंगीकार करने की बजाए, यहूदा ने परमेश्वर द्वारा उसकी ओर बढ़ाए गए प्रेम के प्रति अपने मन को कठोर कर लिया। उसने मसीह का इनकार किया और शैतान को अपने हृदय में प्रवेश करने दिया। उसके मन में शैतान के लिए तो स्थान था, परन्तु मसीह के लिए नहीं। रोटी का टुकड़ा लेते ही, वह तुरंत ही बाहर चला गया, और रात हो चुकी थी। यहूदा ने अपने मन को कठोर किया और अनन्त ज्योति से, जहाँ कभी सूर्यास्त नहीं होता, अनन्त अन्धकार में चला गया, जहाँ कभी सूर्योदय नहीं होता। उसने अपने स्वामी से चांदी के तीस सिक्कों के लिए विश्वासघात किया।

यहूदा ने अंतिम अवसर भी गँवा दिया

गतसमनी की वाटिका में विश्वासघात की घटना के समय, मसीह उसे 'मित्र' कहता है। इस संबोधन में परमेश्वर का प्रेम संसार के सबसे जघन्य पापी के प्रति भी दिखाई देता है। मसीह अपने शत्रुओं से भी प्रेम रखता है और उन्हें पश्चाताप करने का हर संभव अवसर देता है। फिर भी हम यहाँ पर उस आदमी, यहूदा इस्करियोती, को देखते हैं, जिसने स्वर्ग के द्वार की चौखट को चूमा और नरक की आग की गहराइयों में चला गया।

यहूदा के हृदय में मसीह के लिए कोई स्थान नहीं था। प्रिय मित्र, क्या आप के हृदय में मसीह के लिए कोई स्थान है?

ब्रेदरेन मण्डली की विशेषतायें (भाग – 3)

शास्त्री जानसन सी फिलिप

पिछले दो अंकों में हम देख रहे थे कि आज दुनियाँ भर में तमाम मसीही मण्डलियां हैं लेकिन उन में ब्रेदरेन मण्डली एकदम भिन्न है। आज सारी मण्डलियां अपने पादरी-पंडों एवं प्रचारकों को तनख्वाह देकर रखती हैं। लेकिन ब्रेदरन मण्डली ऐसा नहीं करती है।

परमेश्वर के वचन के आधार पर आरंभ से ही ब्रेदरेन मण्डली के विश्वासियों की विचारधारा यह थी कि आत्मिक सेवा करने वाले लोग मण्डली के "भाड़े के टट्टू" नहीं होने चाहिये। विश्वास से सेवा करने वाला परमेश्वर की ओर देख, अपनी सेवा के लिये परमेश्वर से अगुवाई और मार्गनिर्देशन लेता है। "भाड़े का टट्टू," अपने मानुषिक मालिक की ओर देख अपनी सेवा के लिये उस से अगुवाई और मार्गनिर्देशन लेता है। परिणाम यह होता है कि भाडा देने वाला भाडा पाने वालों को प्रभु का दास समझने के बदले अपना दास समझता है। इसके तमाम तरह के बुरे परिणाम पिछले 2000 सालों में हुए हैं।

इस कारण आरंभ से ही ब्रेदरेन मण्डलियों ने इस बात पर जोर दिया कि यदि आप को यकीन है कि प्रभु ने आप को अपनी सेवा के लिये बुलाया है तो अपने खर्चेपानी के लिये प्रभु की ओर देखें। मनुष्य की ओर नहीं। इस नजरिये को विश्वास से जीना, विश्वास से सेवा करना आदि कहा जाता है। आज ब्रेदरन मण्डलियों में आप जिन प्रभु के सेवकों को देखते हैं ये सब इसी आधार पर प्रभु की सेवा करते हैं। उनको मण्डली से किसी भी तरह कि तनख्वाह नहीं दी जाती है। सब नहीं लेकिन कुछ मण्डलियां उनको मकान का किराया दे देती हैं। लेकिन याद रखें कि किराये से कुछ नहीं होता।

सेवकों का एक परिवार होता है। उन परिवारों में दो या अधिक बच्चे होते हैं। इन सभी का भी पेट होता है। उनको भोजन, वस्त्र, ठंड के समय गरम कपडे, कम्बल-रजाई, छोटे बच्चों के लिये दूध, स्कूल की फीस, पुस्तक-कापी, यूनिफार्म, दवादारू, सभी चीजों के लिये पैसा लगता है। सेवक होने के कारण ये चीजें मुफ्त में नहीं मिल जातीं। सेवक होने के कारण वे और उनका परिवार भीख का कटोरा लेकर नमक, तेल, दवा के लिये सड़क किनारे भीख नहीं मांग सकते। वे अपनी जरूरत के लिये प्रभु की ओर देखते हैं।

प्रभु उनकी जरूरतें आसमान से टपका के नहीं देते हैं, बल्कि विश्वासियों की जिम्मेदारी है कि वे इन सेवकों और उनके परिवार की जरूरतों को समझ कर अपनी आय से एक राशि अलग करके उसे प्रभु के दासों एवं उनके परिवारों को दें। प्रेरितों के काम की पुस्तक में हम देखते हैं कि किस तरह से विश्वासी अपने बीच रहने वाले लोगों की जरूरतों का ख्याल रखते थे। पहला कुरिंथियों की पत्री में प्रभु का वचन कहता हैं कि विश्वासियों का कर्तव्य है कि वे उन विश्वासियों का ख्याल रखें जिनके पास भोजन-वस्त्र के लिये अन्य विश्वासियों के मदद की जरूरत है।

आज भारत में ब्रेदरेन मण्डलियों में 2500 से अधिक पूर्णकालिक सेवक एवं उनके परिवार हैं जो विश्वास से जीते हैं। इनमें से कई तो साल भर में लाखों रुपये की तनख्वाह पर लात मार के पूर्णकालिक सेवा में आये हैं। प्रभु इन सब का खर्चा पानी अपने बच्चों के दान के द्वारा चलाते हैं। किसी भी और मसीही समुदाय में हम इस तरह की एक व्यवस्था या इस तरह का अद्भुत व्यवहार नहीं देखते हैं। इसके लिये प्रभु का धन्यवाद हो। लेकिन इस के साथ एक बात न भूलें – आप के आसपास प्रभु के जो सेवक हैं उनकी मदद करना एवं उनका भरण-पोषण करना आपकी जिम्मेदारी है। यह जिम्मेदारी प्रभु ने आप को दी है। इसे समझने और व्यवहार में लाने के लिये प्रभु आप की मदद करें।

(शास्त्री जानसन सी फिलिप प्रभु की सेवा करते है। उनकी बाईबिल शिक्षायें हिन्दी, अंग्रेजी, एवं मलयालम में यूट्यूब पर उपलब्ध हैं)।

आधुनिक मिशनों के जनक : विलियम कैरी

साभार – भाई कृपानंद, बैंगलोर

11 नवंबर 1793 को, "आधुनिक मिशनों के जनक" विलियम कैरी का भारत में पदार्पण हुआ।

कैरी एक डेनिश मालवाहक जहाज से पहुंचे। यह जहाज क्रोन प्रिंसेसा मारिया कोलकाता के घाट में खड़ा किया गया। कैरी ईस्ट मिडलैंड्स के 32 वर्षीय एक मोची तथा साथ ही साथ एक बैपटिस्ट पास्टर थे।

विलियम कैरी का जन्म 17 अगस्त, 1761 को नॉर्थम्पटनशायर में एक बुनकर के परिवार में हुआ था। उनके पास भाषाओं का एक स्वाभाविक वरदान था, और उन्होंने खुद से लैटिन भाषा सीख ली। चौदह साल की उम्र में एक मोची से जूते बनाने की फैक्ट्री में उन्होंने प्रशिक्षिण प्राप्त किया तथा एंग्लिकन चर्च से वे एक भिन्न विश्वास-मत में आ गए, अंततः एक बैपटिस्ट कालीसिया में शामिल हो ये और एक मोची बन गए। चौबीस वर्ष की उम्र में कैरी ने एक केल्विनिस्ट बैपटिस्ट चर्च के पास्टर का पद स्वीकार कर लिया तथा डोरोथी नामक एक कन्या से विवाह कर लिया। दोनों से उनके सात संतान उत्पन्न हुए।

5 अक्टूबर 1783 को विलियम कैरी को जॉन रायलैंड ने बपतिस्मा दिया। कैरी जॉन रायलैंड, जॉन सटक्लिफ और एंड्रयू फुलर जैसे पुरुषों के साथ विशेष बैपटिस्ट के एक स्थानीय झुण्ड में शामिल हो गए, जो बाद के वर्षों में उनके करीबी दोस्त बन गए। उन्होंने कैरी को हर दूसरे रविवार को अल्र्स बार्टन के पास के गांव में अपनी कलीसिया में प्रचार करने के लिए आमंत्रित किया।

1785 में, कैरी को मौलटन गांव के लिए एक स्कूल शिक्षक के रूप में नियुक्त किया गया। उन्हें स्थानीय बैपटिस्ट चर्च में पास्टर के रूप में सेवा करने के लिए भी आमंत्रित किया गया। इस दौरान उन्होंने जोनाथन एडवर्ड्स द्वारा लिखित डेविड ब्रेनार्ड की जीवनी तथा अन्वेषक जेम्स कुक की पत्रिकाओं को पढ़ा, और वे सारे जगत में प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने के लिए बोझिल हो गए। न्यू इंग्लैंड के नैतिकतावादी (प्यूरिटन) मिशनरी जॉन एलियट (1604 - 21 मई 1690), और डेविड ब्रेनार्ड

(1718-47) कैरी के "उच्च-स्तरीय नायक" और "प्रेरणास्त्रोत" बन गए। अमेरिकी भारतीयों, डेविड ब्रेनार्ड और जॉन एलियट के लिए मिशनरियों की कहानियों तथा कैप्टन जेम्स कुक के विश्व-भ्रमण कारनामों से प्रभावित और प्रेरित होकर, केरी ने विदेशी मिशनों का एक सिद्धांत तैयार किया। इसे एक पुस्तक का रूप देकर उन्होंने इसका शीर्षक दिया – "गैर-मसीहियों (अन्यजातियों) के उद्धार के लिए साधनों का उपयोग करने हेतु मसीहियों की बाध्यताओं पर एक सर्वेक्षण" (एन इंक्वायरी इनटू द ऑबलीगेशन ऑफ क्रिश्चंस टू यूज मीन्स फॉर द कनवर्जन ऑफ द हीदन्स)।

कैरी ने जूतों की मरम्मत करते हुए ग्रीक, हिब्रू, इटेलियन, डच (हॉलेण्ड देश की भाषा) और फ्रेंच में महारत हासिल की।
बुधवार, मई 31,1792 को नॉटिंघम में, कैरी ने यशायाह 54:2–3 से एक मिशनरी समर्थक उपदेश (द डेथलेस सरमन) का प्रचार किया, जिसमें उन्होंने बार-बार एक सूक्तिवाक्य (एपिग्राम) का प्रयोग किया जो उनका सबसे प्रसिद्ध उद्धरण बन गया:

"परमेश्वर से महान चीजों की अपेक्षा करें;
परमेश्वर के लिए महान चीजों का प्रयास करें"।

कैरी ने अक्सर यशायाह 54 से अपना पाठ लिया, जैसे कि पद 5 "तेरा छुड़ानेवाला .... सारी पृथ्वी का परमेश्वर कहलाएगा"
कौन? – "तेरा छुड़ानेवाला" (तेरा उद्धारकर्ता)।
किसका उद्धारकर्ता? - तेरा उद्धारकर्ता।
क्या यह प्रतिज्ञा सुनिश्चित है? – हां, तेरा छुड़ानेवाला सारी पृथ्वी का परमेश्वर कहलाएगा।
क्या यह प्रतिज्ञा सीमित है? नहीं, सारी पृथ्वी का।
मरकुस 16:15 में दी गई प्रभु की आज्ञा कैरी के लिए चुनौतीपूर्ण थी। निःसंदेह, परमेश्वर का अर्थ वही है, जो परमेश्वर कहते हैं – अपरिवर्तनीय।
जब वह कहता है "जाओ," तो उसका मतलब होता है जाओ।
जब वे कहते हैं, "जाओ," तो उसका मतलब है जाओ।
जब वे कहते हैं, "सारे संसार में," तो उसका अर्थ है सारे संसार में।

जब वे कहते हैं, "सुसमाचार का प्रचार करें," तो उसका अर्थ है सुसमाचार का प्रचार करना।
जब वे कहते हैं, "हर प्राणी के पास जाओ," तो उसका मतलब हर प्राणी से है।
निश्चय ही परमेश्वर का अर्थ वही है, जो वे कहते हैं।
कैरी ने महसूस किया कि मिशनरी सेवाकार्य कलीसिया का सर्वोच्च और सबसे पवित्र प्रयास (उद्यम) है। उनकी दृष्टि में पूरी दुनिया शामिल थी:
"परमेश्वर ने जगत से इतना प्रेम किया।"
"तुम सारे जगत में जाओ।"
"मसीह, जगत के उद्धारकर्ता हैं।"
"परमेश्वर मसीह में होकर जगत का मेलमिलाप कर रहे हैं।"
"जगत के पापों का प्रायश्चित।"
"तेरा छुड़ानेवाला, सारे जगत का परमेश्वर।"
मिशन के संबंध में करुणा और बोझ के साथ उनके उपदेश के बाद, वहां की कलीसिया स्तब्ध और शांत रह गई! कैरी अपने एक मित्र के पास गये और अपने दिल की पीड़ा के साथ उनसे कहा, "क्या हम कुछ नहीं करने जा रहे हैं? ओह, चलो हम परमेश्वर की बुलाहट के प्रत्युत्तर में कुछ करें।"

- शेष अगले अंक में ...

उत्पत्ति की पुस्तक का परिचय

इवें. राज कुमार, फिरोजपुर, पंजाब

लेखक : उत्पत्ति की पुस्तक के लेखक की पहचान नहीं हो पाई है। पारम्परिक रूप से, मूसा को ही इसके लेखक होने का अनुमान लगाया है। उत्पत्ति की पुस्तक को मूसा के द्वारा लिखे जाने को अस्वीकार करने का कोई निर्णायक कारण नहीं मिलता है।

लेखन तिथि : उत्पत्ति की पुस्तक यह नहीं बताती है कि यह कब लिखी गई थी। इसके लेखन की तिथि ईसा पूर्व 1440 और 1400 के मध्य में होने की सम्भावना है, उस समय जब मूसा ने इस्राएलियों को मिस्र से बाहर निकालने में अगुवाई प्रदान की और उसकी मृत्यु हुई थी।

लेखन का उद्देश्य : उत्पत्ति की पुस्तक को कई बार पूरी बाइबल की "कथावस्तु-का-मूल" कह कर पुकारा गया है। बाइबल के अधिकांश धर्मसिद्धान्तों को उत्पत्ति की पुस्तक में निहित "मूल" के रूप में परिचित किया गया है। मनुष्य के पाप में पतित होने के साथ, परमेश्वर के द्वारा उद्धार की प्रतिज्ञा या छुटकारे को भी इसमें लिपिबद्ध किया गया है (उत्पत्ति 3:15)। सृष्टि, पाप के आरोपण, धर्मीकरण, प्रायश्चित, भ्रष्टता, क्रोध, अनुग्रह, प्रभुता, दायित्व और अन्य कई धर्मसिद्धान्तों को भी आरम्भ होने की पुस्तक उत्पत्ति में सम्बोधित किया गया है।

जीवन के बहुत से बड़े प्रश्नों का उत्तर उत्पत्ति में ही मिलता है। (1) मैं कहाँ से आया हूँ? (परमेश्वर ने हमारी सृष्टि की — उत्पत्ति 1:1) (2) मैं यहाँ पर क्यों हूँ? (हम यहाँ पर परमेश्वर के साथ सम्बन्ध रखने के लिए हैं — उत्पत्ति 15:6) (3) मैं कहाँ पर जा रहा हूँ? (मृत्यु पश्चात् हमारा गंतव्य है — उत्पत्ति 25:8)। उत्पत्ति की पुस्तक वैज्ञानिकों, इतिहासकारों, धर्मवैज्ञानिक, घरेलू स्त्रियों, किसानों, यात्रियों, और परमेश्वर के जन को आकर्षित करती है। बाइबल की यह पुस्तक मानवजाति के लिए उसकी योजना के लिए परमेश्वर की कहानी के आरम्भ का एक उचित रूप है।

कुँजी वचन : उत्पत्ति 1:1, "आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।"

उत्पत्ति 3:15, "और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन करूँगा; वह तेरे सिर को कुचल डालेगा और तू उसकी एड़ी को डसेगा।"

उत्पत्ति 12:2-3, "और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊँगा, और तुझे आशीष दूँगा, और तेरा नाम महान् करूँगा, और तू आशीष का मूल होगा। जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूँगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूँगा; और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएँगे।"

उत्पत्ति 50:20, "यद्यपि तुम लोगों ने मेरे लिये बुराई का विचार किया है, जिसमें वह ऐसा करे, जैसा आज के दिन प्रगट है, कि बहुत से लोगों के प्राण बचे हैं।"

संक्षिप्त सार : उत्पत्ति की पुस्तक को दो खण्डों में विभाजित किया जा सकता है: आदिकालीन इतिहास और कुलपतियों का इतिहास। आदिकालीन इतिहास (1) उत्पत्ति (अध्याय 1-2); (2) मनुष्य का पाप में गिरना (अध्याय 3-5); (3) जल प्रलय (अध्याय 6-9); और (4) बिखर जाना (अध्याय 10-11)। कुलपतियों का इतिहास चार बड़े लोगों के जीवन का वृतान्त लिपिबद्ध करता है: (1) अब्राहम (12:1 - 25:8); (2) इसहाक (21:1- 35:29); (3) याकूब (25:21-50:14); और (4) यूसुफ (30:22-50:26)।

परमेश्वर ने ऐसे ब्रह्माण्ड की रचना की थी, जो अच्छा और पाप से स्वतंत्र था। परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि उसके साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध रखने के लिए की थी। आदम और हव्वा ने पाप किया और परिणामस्वरूप बुराई और मृत्यु को इस संसार में ले आए। बुराई बड़ी तेजी के साथ तब तक बढ़ती चली गई जब तक कि इस संसार में केवल एक ही परिवार नहीं रह गया जिसमें परमेश्वर ने भलाई को पाया। परमेश्वर ने जल-प्रलय को बुराई को मिटाने के लिए भेज दिया, परन्तु नूह और उसके परिवार को पशुओं समेत जहाज में जाने के द्वारा बचा लिया। जल प्रलय के पश्चात्, मनुष्य फिर से बढ़ने लगे और पूरे संसार में फैल गए।

परमेश्वर ने अब्राहम को चुन लिया, कि उसके द्वारा वह उसके चुने हुए लोगों की सृष्टि करे और आखिरकार प्रतिज्ञा किए हुए मसीह को भेजे। चुने हुए वंश के अंश की रेखा अब्राहम के पुत्र इसहाक, और तब इसहाक के पुत्र याकूब के साथ आगे बढ़ी। परमेश्वर ने याकूब का नाम इस्राएल में परिवर्तित

कर दिया, और उसके बारह पुत्र इस्राएल के बारह गोत्रों के पूर्वज बन गए। अपनी सर्वोच्चता में, परमेश्वर ने याकूब के पुत्र को यूसुफ के भाइयों के द्वारा धोखे से भरे हुए कार्य के कारण मिस्र में भेज दिया। यह कार्य उसके भाइयों के द्वारा उसकी बुरा करने की मंशा से किया गया था, परन्तु परमेश्वर की ओर से भलाई की मंशा से था और अन्ततः याकूब और उसके परिवार को यूसुफ के द्वारा विनाशकारी अकाल से बचाया गया, जो मिस्र में एक बड़े पद पर पहुँच चुका था।

प्रतिछाया : नया नियम के बहुत से विषय उत्पत्ति में ही निहित हैं। यीशु मसीह, जो स्त्री का वंश है, वह शैतान की शक्ति को नष्ट कर देगा (उत्पत्ति 3:15)। जैसा कि यूसुफ के साथ था, परमेश्वर की मनुष्य के लिए उसके पुत्र के बलिदान के द्वारा की जाने वाली भलाई की योजना उसकी भलाई के लिए ही थी, यद्यपि वे जिन्होंने यीशु को क्रूसित किया था, उनकी मंशा उसके लिए बुराई की चाहत थी। नूह और उसके परिवार के बचे हुए लोगों में से थोड़े ही थे, जिनका चित्रण बाइबल में किया गया है। डरावनी विषम और कठिन परिस्थितियों के होने के पश्चात् भी, परमेश्वर ने सदैव ही स्वयं के निमित्त विश्वासयोग्य बचे हुए लोगों को संभाले रखा है। इस्राएलियों के बचे हुए लोग बेबीलोन की बन्धुवाई के पश्चात् यरूशलेम में वापस लौट आए; परमेश्वर ने यशायाह और यिर्मयाह में वर्णित सभी सावधानियों से बचाते हुए बचे हुए लोगों को संभाल कर रखा; इजेबेल के क्रोध से 7000 बचे हुए याजक छिपे हुए थे; परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की, कि बचे हुए यहूदी किसी दिन अपने सच्चे मसीह को अपना लेंगे (रोमियों 11)। यहूदी और अन्यजाति दोनों ही के लिए अब्राहम के द्वारा प्रदर्शित विश्वास परमेश्वर की ओर से वरदान और उद्धार होगा (इफिसियों 2:8-9; इब्रानियों 11)।

व्यवहारिक शिक्षा : उत्पत्ति की पुस्तक का व्यापक विषय परमेश्वर का शाश्वतकालीन से अस्तित्व में होना और उसके द्वारा इस संसार की सृष्टि किया जाना है। परमेश्वर के अस्तित्व का बचाव करने के लिए लेखक ने किसी तरह का कोई प्रयास नहीं किया है; वह तो बड़ी सरलता से कहता है, कि परमेश्वर सभों के ऊपर सर्वसामर्थी रूप में विद्यमान है, सदैव से था और सदैव के लिए रहेगा। ठीक इसी तरह से, हमारा भरोसा उत्पत्ति की सच्चाइयों में, उन लोगों के दावों के पश्चात् भी है, जो इन्हें इन्कार कर देते हैं। संस्कृति, राष्ट्रीयता या भाषा चाहे कुछ भी क्यों न हो, को एक किनारे करते हुए, सभी लोग परमेश्वर के प्रति जवाबदेह हैं। परन्तु पाप के कारण, जिसे पतन के समय इस संसार से परिचित कर दिया गया है, हम परमेश्वर से पृथक हो चुके हैं। परन्तु एक छोटी सी जाति इस्राएल के द्वारा, परमेश्वर के छुटकारे की

योजना मनुष्य जाति के लिए प्रगट हो गई और सभों को उपलब्ध की गई है। हम उसकी योजना में आनन्दित हैं।

परमेश्वर ने इस ब्रह्माण्ड, पृथ्वी, और इसमें रहने वाले सभी जीवित प्राणियों की रचना की है। हम हमारे जीवनों की चिन्ताओं का निपटारा करने के लिए उसके ऊपर भरोसा कर सकते हैं। परमेश्वर एक निसहाय परिस्थिति को अपने हाथ में ले लेता है, उदाहरण के लिए अब्राहम और सारा का सन्तानहीन होना, और वह अद्भुत कार्यों को करता है, यदि हम मात्र उसके ऊपर भरोसा करें और उसकी आज्ञा का पालन करें। भयानक और अन्याय से पूर्ण भरी हुई बातें हमारे जीवनों में घटित हो सकती हैं, जिस तरह की यूसुफ के साथ घटित हुई थी, परन्तु परमेश्वर सदैव एक बड़ी भलाई को ले आएगा यदि हम उसमें और उसकी सर्वोच्च योजना में विश्वास करते हैं। "हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात् उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं" (रोमियों 8:28)।

भक्तिपूर्ण चिंतन (यूहन्ना 2:1-11)

इव्हे. थॉमस अब्राहम, रायपुर

विवाह के घर में प्रभु यीशु का आगमन शायद अभी-अभी हुआ है (वह शायद अभी हाथ धोने के स्थान पर है) और विवाह का भोज लगभग समाप्त हो गया है (पद 10)। उन्हें वहां आमंत्रित किया गया था, वह अपने लोगों के साथ घुल-मिल गया। जैसे ही वे विवाह के भोज में पहुंचे, हम देखते हैं कि भोज में दाखरस खत्म हो चुका है, यह एक बड़ी शर्मनाक स्थिति है। शायद, भोज के प्रबंधक ने कई बार दाखरस में पानी मिलाकर उसे पतला किया है और अब प्रभु यीशु और उनके शिष्यों के आने पर और अधिक मिलाना संभव नहीं था। विवाह सभी संस्कृतियों में एक खुशी का अवसर है और प्रभु यीशु ने ऐसे अवसर पर अपनी सेवकाई शुरू की। प्रभु यीशु को अक्सर ज़रूरतमंदों, दुःखियों, पापियों आदि के साथ मंदिर में देखा जाता है, यही एक जगह है जहाँ हम उन्हें विवाह-भोज में पाते हैं।

विवाह में दाखरस तो बहुतायत से दिखाई दे रहा है, परंतु यहाँ नव-विवाहित दम्पत्ति जिन्होंने एक साथ अपनी नई जिंदगी शुरू की है, अभी वे एक बड़ी समस्या में हैं।

प्रभु यीशु हमेशा अपने समय के पावंद हैं, शायद दूल्हा और दुल्हन ने दाखरस खत्म होने से पहले प्रभु यीशु के आने का लंबा इंतजार किया होगा, अब जब वे आ गए हैं तो वे एक शर्मनाक स्थिति में अपने आप को पाते हैं, यह नहीं जानते कि उनके लिए अब दाखरस कहाँ से लाएँ।

इस घटना से हम कुछ महत्वपूर्ण बातों को सीख सकते हैं:

1. काना में शादी, दाखरस और आश्चर्य: पारिवारिक जीवन

वैवाहिक जीवन की शुरुआत करने का क्या तरीका है? उन्होंने यीशु को अपने वैवाहिक जीवन में आमंत्रित किया। यह परिवार शायद प्रभु यीशु का कोई करीबी रिश्तेदार रहा होगा। विलियम बार्कले का कहना है कि शायद यह यूहन्ना का ही विवाह था। यूहन्ना के अनुसार प्रभु यीशु ने अपनी सेवकाई एक विवाह में आरम्भ की। वास्तव में बाइबिल एक विवाह से शुरू होती है और एक ब्याह (विवाह) के साथ समाप्त होती है। परिवार परमेश्वर का हृदय है, यह परमेश्वर द्वारा स्थापित प्रथम संस्था है। इसलिए पारिवारिक जीवन महत्वपूर्ण रिश्ता है, वास्तव में सबसे महत्वपूर्ण। इसलिए इस पर गंभीरता से विचार करें।

“एक विवाह जो परमेश्वर की इच्छा में है वह परमेशवर की आशीष का जरूर अनुभव करेगा।”

2. पानी से दाखरस: साधारण से असाधारण

प्रभु यीशु ने साधारण को असाधारण में बदल दिया और उसे कीमती बना दिया। यह नई वाचा के लिए पुरानी वाचा के समान है। प्रभु यीशु ने सर्वोत्तम को अन्तिम समय तक रखा के लिए है। साथ ही सामान्य प्रयोजन के लिए उपयोग किए जाने वाले ‘मटके’ अब बड़े उद्देश्य के लिए उपयोग किए जाने लगे हैं।

3. नौकरों को मरियम की आज्ञा: "जो कुछ वह तुम से कहे, वही करना”

मरियम ने सेवकों से यही कहा, आज बहुत से लोग मरियम से प्रार्थना कर रहे हैं, वे सोचते हैं कि प्रभु यीशु ने यह चमत्कार अपनी माता मरियम के कहने पर किया। प्रभु यीशु ने माँ या माता शब्द का उपयोग करने के बजाय उसे "महिला" या “नारी” के रूप में संबोधित किया। यद्यपि यह एक महिला के लिए एक सम्मानित शब्द था, परंतु ऐसे विचार से इसका कोई संबंध नहीं था। प्रभु यीशु ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि यह कार्य उसने मरियम के अनुरोध पर नहीं किया, लेकिन जब “उसका समय” आएगा, तभी वह काम करेगा।

हालाँकि यह नितांत आवश्यक है कि हम अपने अनुरोध को परमेश्वर से अवगत करायें। वह हमारी सभी आवश्यकताओं को जानता है, परन्तु प्रतीक्षा करता है कि हम उससे माँगें।

4. अपमान की स्थिति से प्रसन्नता की ओर : प्रार्थना का महत्व

यह दूल्हे के परिवार के लिए उनकी ओर से अनुचित योजना हेतु वास्तव में एक अपमान था। आमतौर पर शुरुआत में अच्छा दाखरस देने और बाद में इसे पतला करने का रिवाज था। अब यह स्थिति आ गई है कि इसे और अधिक पतला करना संभव नहीं था। ऐसी परिस्थिति में अपमानित होने की कितनी प्रबल संभावना थी! परन्तु यह उनके लिए अच्छा था कि प्रभु यीशु वहाँ थे। उन्होंने प्रभु यीशु को कोई आश्चर्यकर्म करने के लिए आमंत्रित नहीं किया था, वह तो एक अतिथि था जिसने उस विषम परिस्थिति को संभाला। आइए हम अपनी सभी जरूरतों और जीवन की यात्राओं में उन्हें हमारे साथ उपस्थित रहने के लिए उनसे प्रार्थना करने की आदत डालें...

5. अंत के लिए सर्वश्रेष्ठ: वह मदद करता है लेकिन इंतजार करता है, वह कभी धोखा नहीं देता

मनुष्य धोखा देता है, अच्छी बातों का वायदा करता है लेकिन जब ठीक समय आता है तो पता चलता है कि जैसा हमसे वायदा किया गया था वो वास्तविक नहीं था। प्रभु यीशु के कार्य वास्तविक और सर्वोत्तम हैं।

कभी-कभी हम सोचते हैं कि परमेश्वर देरी कर रहे हैं। लाजर की मृत्यु के बाद उसकी बहनों को लगा कि प्रभु यीशु देर से आए, लेकिन प्रभु यीशु जो भी करते हैं वह ठीक समय पर और सर्वोत्तम होता है। आज स्थिति बहुत कठिन और रहस्यमयी हो सकती है, परंतु परमेश्वर की योजनाएँ सर्वासिद्ध हैं।

6. पापियों से पवित्र लोग : वह अयोग्य पात्रों का उपयोग करता है

प्रभु यीशु दाखरस की दुकान में जाने और दाखरस के बर्तनों को पानी से भरने के लिए कहने के बजाय, उस प्रवेश द्वार पर जाते हैं जहां मेहमानों को हाथ-पैर धोने के लिए मटकों में पानी रखा गया था ... और वे उन मटकों में रखे गए लगभग 600-750 लीटर पानी को दाखरस में बदल देते हैं। ये पात्र पत्थर के बने होते थे और एक बिलकुल साधारण उद्देश्य (धोने) के लिए रखे जाते थे। यह बहुत अच्छी तरह से दर्शाता है कि कैसे परमेश्वर अयोग्य लोगों को बुलाते हैं और उन्हें अपनी महिमा के लिए सक्षम बनाकर उपयोग करते हैं।

परमेश्वर ने उन बहिष्कृत और तिरस्कृत लोगों को बुलाया जो बाहर निकाले हुए थे (1कुरि.1:26)।

7. आज्ञाकारिता हमारे जीवनों में आशीषों को लाती है।

जब प्रभु यीशु ने सेवकों से घड़ों को जल से भरने के लिए कहा, तो उन्होंने ईमानदारी से आज्ञा मानकर सभी घड़ों को लबालब भर दिया। वे एक 'अजनबी' की बात मानने के लिए काफी विनम्र थे, वे प्रभु यीशु के साथ बहस कर सकते थे और एक ही मटका भर सकते थे और उन्हें हाथ-पैर धोकर जाने के लिए कह सकते थे, लेकिन वे सेवक विनम्र और आज्ञाकारी और वफादार थे। वे आलसी नहीं थे, उन्होंने वहां पर रखे हुए सभी घड़ों को लबालब भर दिया। प्रभु यीशु ने उन्हें 1. पानी भरने, 2. निकालने, और 3. ले जाने की तीन आज्ञाएँ दीं।

8. विवाह में सबसे अच्छा उपहार: शर्मनाक स्थिति से आत्मविश्वास की स्थिति में।

भोज के प्रधान को पता नहीं था कि दाखरस कहाँ से आया है इसलिए वह दूल्हे के पास जाता है, अब

दूल्हा भी हैरान हो गया होगा ..... कैसे प्रभु यीशु की उपस्थिति के कारण आने वाली समस्या आसानी से हल हो गई! प्रभु ने उनकी शर्मनाक स्थिति को आत्मविश्वास और आरामदायक स्थिति में बदल दिया। परमेश्वर हमें प्रतिष्ठा के पद पर पहुंचाते हैं।

कई मेहमान बहुत से उपहार लाए होंगे, लेकिन प्रभु यीशु का उपहार सबसे अच्छा था! लोग शायद बड़बड़ाते हुए वापस चले जाते - "उसने हमें आमंत्रित किया लेकिन हमें नहीं खिला सका", लेकिन प्रभु यीशु के कारण वे सभी संतुष्ट होकर गए और उन्होंने नवविवाहित जोड़े को आशीष दी। परमेश्वर ने हमें सर्वश्रेष्ठ दिया है : "मैं यहोवा के कारण अति आनन्दित होऊंगा, मेरा प्राण परमेश्वर के कारण मगन रहेगा; क्योंकि उसने मुझे उद्धार के वस्त्र पहिनाए, और धर्म की चद्दर ऐसे ओढ़ा दी है जैसे दूल्हा फूलों की माला से अपने आप को सजाता और दुल्हिन अपने गहनों से अपना सिंगार करती है।" (यशायाह 61:10)।

9. हमारी खराब योजना को संभालने वाले परमेश्वर: हमारी योजनाएं असफल हो सकती हैं।

अब वहां की स्थिति क्या बनी, हम वास्तव में नहीं जानते। हो सकता है कि उनका हिसाब गलत हो गया हो, शायद उम्मीद से ज्यादा लोग शामिल हो गए हों, या लोगों ने ज्यादा खा लिया हो या ज्यादा बर्बाद कर दिया हो, ये सभी संभावनाएं हैं। कुछ लोग यह भी कह सकते हैं कि प्रभु यीशु अपने बहुत से शिष्यों के साथ गए थे ... इत्यादि। परंतु एक बात तो बहुत ही स्पष्ट है कि हम बहुत सारी योजनाएँ बनाते हैं, लेकिन सब कुछ वैसा नहीं होता जैसा हम सोचते हैं या योजना बनाते हैं, हम असफल हो सकते हैं, स्थिति हमारे हाथ से निकल जाती है, दुर्घटनाएँ होती हैं, यहां तक कि जब हम सर्वोत्तम संभव तरीके से योजना बनाते हैं तब भी हम असफल होने के लिए बाध्य होते हैं। इस कोरोना दिनों की कल्पना कौन कर सकता था? जरा सोचिए कि यदि परिस्थितियां ऐसी नहीं होतीं तो हम लोग अभी तक क्या-क्या योजनाएं नहीं बना लिए होते?

आइए हम सब कुछ सर्वोत्तम संभव तरीके से करें, और प्रार्थना करें और परमेश्वर पर भरोसा रखें और फिर बाकी सभी बातों को परमेश्वर पर छोड़ दें। हमारी ओर से कमियां हो सकती हैं, लेकिन प्रार्थना करें और परमेश्वर पर भरोसा रखें, बाकी सब वे ही नियंत्रित करेंगे।

10. प्रभु यीशु का पहला आश्चर्यकर्म : पहला चिन्ह।

जबकि "यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला उपवास और कठोर अनुशासन के साथ आया, प्रभु यीशु खाता-पीता आया" (लूका 7:33-34)। प्रभु यीशु ने पुराना नियम के पानी को नया नियम दाखरस में बदल दिया! प्रभु

यीशु ने इसे आश्चर्यकर्मों की शुरुआत के रूप में किया। यह इस बात को दर्शाता है कि उसने यहूदियों के साथ पुरानी वाचा को प्रेम की नई वाचा में बदल दिया है! प्रभु यीशु ने परमेश्वर के राज्य की तुलना विवाह-भोज के साथ की है।

यूहन्ना कहता है कि यह पहला चिन्ह था जिसे प्रभु यीशु ने दिखाया। चिन्ह कुछ ऐसी बात है जो हमें कुछ संकेत देती है या किसी बात की ओर इशारा करती है। यूहन्ना किस बात की ओर इशारा कर रहा है?

"यीशु ने और भी बहुत चिन्ह चेलों के सामने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए। परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है : और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ" (यूहन्ना 20:30-31)।

मैं दूसरों के प्रति दयालुता क्यों दिखाऊं?

तबस्सुम रॉय पेस, भिवाड़ी, राजस्थान

"द गुड न्यूज" चर्च की ओर से बच्चों के लिए सर्दियों की छुट्टियों में एक प्रोग्राम रखा गया। यह प्रोग्राम सुदूर एक छोटे से पहाड़ी गांव की कलीसिया के कार्यक्रम का एक भाग था। इस अत्यंत सुंदर गांव के वासी बहुत दयालु, सौम्य और प्रेम रखने वाले लोग थे। वे परमेश्वर से प्रेम करने वाले लोग थे और अपनी ओर से उसकी आज्ञाओं का पालन करने में कोई कसर नहीं छोड़ते थे। इस गांव का द गुड न्यूज़ चर्च परमेश्वर के एक चमकते हुए तारे के समान इस गांव की शोभा बढ़ाता था। पड़ोस के गांव और कस्बे के लोग भी अपने बच्चों को परमेश्वर के विषय में और अधिक जानने के लिए यहां भेजते थे। कुछ इस प्रकार की प्रतिष्ठा थी इस कलीसिया की अपने आस-पास के इलाके में। परमेश्वर ने इन लोगों को आत्मिक रूप में भरपूरी से आशिषित किया था। वे सुख शांति से मिलजुल कर रहते थे। उनका लक्ष्य अपने बच्चों को परमेश्वर के मार्ग पर चलने के लिए तैयार करना था।

दिसंबर माह अपने सोपान पर था, बच्चे अधीरता से प्रोग्राम के आरंभ होने की प्रतीक्षा में थे। स्टेला भी बाकी बच्चों के समान खूब उत्साहित थी। प्रोग्राम से एक रात पूर्व वह ठीक से सो भी नहीं पाई। सारी रात वह इस सोच में थी कि कल कौन-कौन सी नई चीजें सीखने को मिलेंगी। और यह हाल केवल स्टेला का ही नहीं बल्कि सभी बच्चों का था। अगली सुबह चर्च के प्राचीन और अगुवे सबको एक कतार में खड़े कर के प्रोग्राम के विषय में जानकारी दे रहे थे। इस वर्ष उन्होंने एक नई गतिविधि को प्रोग्राम में जोड़ा था। इस गतिविधि को जीतने वाले को दयालु सामरी का बैज देकर सम्मानित किया जाएगा। अरे वाह! यह तो सुनने में बड़ा अच्छा लग रहा है। बच्चों की भीड़ से बड़बड़ाने का तेज़ स्वर सुनाई देने लगा, वे जानना चाहते थे कि इस बैज को जीतने के लिए उन्हें क्या करना होगा।

भाई टॉम जो इस गतिविधि की अगुवाई कर रहे थे उन्होंने कहा कि दयालुता के कार्य उन्हें इस बैज को जीतने के समीप ले आयेंगे।

अब, सभी बच्चे इस बैज को जीतने की होड़ में लग गए। वे अब अपना सबसे दयालु रूप दिखाना चाहते

थे। जिम ने तो सारी हदें पार कर दी, वह भाई टॉम के पीछे-पीछे हर जगह जाने लगा ताकि वह उसे अच्छा कार्य करते देख सकें।

पहले दिन के अंत में जब भाई टॉम बच्चों को संबोधित करने लगे तो मुस्कुरा कर कहने लगे कि दयालुता का कार्य सिर्फ तभी माना जाएगा जब वास्तव में किसी ज़रूरतमंद की सहायता की जाए। सब ज़ोर ज़ोर से हंसने लगे।

ये तो बड़ा मुश्किल काम है, जोशुआ के मुंह से निकला।

उन्हें प्रोग्राम की नित्य गतिविधियों में भाग लेते हुए इस बैज को अर्जित करना था।

अधिकतर बच्चों ने वही किया जो जिम ने किया था, दयालु सामरी होने का दिखावा! इस गतिविधि का लक्ष्य उन्हें परमेश्वर के तरीकों से जीना सिखाना था। स्टेसी के लिए यह कार्य बहुत कठिन नहीं था। इस प्रकार का जीवन उसकी दिनचर्या का एक भाग था। उसने यह अपने माता-पिता से सीखा था।

वह हर वर्ष स्टाफ के बच्चों और शिक्षकों को भोजन और पानी बांटने में सहायता करती थी। वह सभी को प्रेम और महत्त्व देती थी। कैंप के लगभग सभी बच्चे उसके मित्र थे।

कुछ नए बच्चे जो उसे नहीं जानते थे उन्हें लगा कि वह ये सब बैज के लिए कर रही है। पर स्टेसी को इससे फर्क नहीं पड़ता था। परमेश्वर ने उसे सेवा करने का वरदान दिया था और वह इसका उपयोग खुशी से कर रही थी। यहां तक कि जिन्होंने उसका मज़ाक उड़ाया था कि वह ये सब वह बैज के लिए कर रही है उसने उनकी भी सेवा की।

एक दिन, कैंप में जिम की तबीयत खराब हो गई। उसके दोस्तों को लगा कि ज़्यादा खाने के कारण उसकी तबीयत खराब हुई है और वे उसका मज़ाक उड़ाने लगे। लेकिन स्टेसी ने उसका खूब ख्याल रखा, उसे समय पर खाना और दवाई दी। यह देखकर जिम का बर्ताव और सोच दोनों बदल गए। उसे अब समझ में आया कि इस प्रोग्राम का लक्ष्य क्या है और परमेश्वर के अनुसार जीवन किस प्रकार जीते

हैं। इस कार्य और जीवन दोनों के प्रति बदले रवैए से जिम एकदम एक भिन्न इंसान बन गया।

क्या यह बताने की आवश्यकता है कि स्टेसी और जिम दोनों ने बैज जीता? इस बैज को जीतने वाले वे ही इकलौते ही नहीं थे। कुछ और बच्चों ने भी यह बैज जीता था। वे जिन्होंने इनके जीवन और रहन-सहन से कुछ सीखा था और वे भी जो स्टेसी के जैसे थे।

बाइबल में प्रभु यीशु मसीह के पुनः आगमन के विषय में लिखा है।

"यह राज्य तुम्हारा है क्योंकि मैं भूखा था और तुमने मुझे कुछ खाने को दिया, मैं प्यासा था और तुमने मुझे कुछ पीने को दिया। मैं पास से जाता हुआ कोई अनजाना था, और तुम मुझे भीतर ले गये। मैं नंगा था, तुमने मुझे कपड़े पहनाए। मैं बीमार था, और तुमने मेरी सेवा की। मैं बंदी था, और तुम मेरे पास आये।"

फिर उत्तर में धर्मी लोग उससे पूछेंगे, 'प्रभु, हमने तुझे कब भूखा देखा और खिलाया या प्यासा देखा और पीने को दिया? तुझे हमने कब पास से जाता हुआ कोई अनजाना देखा और भीतर ले गये या बिना कपड़ों के देखकर तुझे कपड़े पहनाए? और हमने कब तुझे बीमार या बंदी देखा और तेरे पास आये?'

"फिर राजा उत्तर में उनसे कहेगा, 'मैं तुमसे सत्य कह रहा हूँ जब कभी तुमने मेरे भोले-भाले भाईयों में से किसी एक के लिए भी कुछ किया तो वह तुमने मेरे ही लिये किया।'

प्रिय बच्चो, क्या आपको याद है कि आखरी बार आपने किसी जरूरतमंद की सहायता कब की थी? दयालु स्वभाव परमेश्वर को मानने वाले लोगों के स्वभाव का एक अभिन्न अंग है। इसी से लोगों को पता चलता है कि हम प्रभु यीशु मसीह के मार्ग पर चलने वाले लोग हैं। क्या आपके कार्यों में प्रभु यीशु मसीह की झलक दिखती है?

असंभव को संभव करनेवाला परमेश्वर

निर्मल खाण्डेलकर, राजनांदगांव (छ.ग.)

विश्वास का आरम्भ वहाँ से होता है, जहाँ से सब संभावनाएं समाप्त हो जाती हैं। लोग कहते हैं कि विश्वास देख कर किया जाता है, परंतु विश्वास मन की आंखों का चश्मा है। इसलिये हमें विश्वास का चश्मा पहनना बेहद जरुरी है।

एक बार एक नास्तिक मित्र ने अपने एक मसीही मित्र से कहा, "मैं ईश्वर या भगवान जैसी चीजों पर विश्वास नहीं करता, क्योंकि ईश्वर है ही नहीं, क्योंकि वह दिखाई नहीं देता।" तब उस मसीही ने अपने मित्र से कहा, "हे प्रिय भाई, किसी भी वस्तु को बनानेवाला कोई न कोई तो होता ही है, जैसे साईकल, हवाई जहाज, बल्ब, कुर्सी, टेबल इत्यादि। ठीक उसी तरह हमें भी ईश्वर ने हमारी माँ की कोख के अन्दर बनाया है।" मसीही मित्र ने उस नास्तिक को बाइबल से दो बहुत ही महत्वपूर्ण पदों को पढ़कर सुनाया: "तेरे हाथों से मैं बनाया और रचा गया हूं ... देखो, लड़के यहोवा के दिये हुए भाग हैं, गर्भ का फल उसकी ओर से प्रतिफल है" (भजनसंहिता 119:73; 127:3)। इन वचनों को सुनकर वह नास्तिक आश्चर्यचकित हो गया और सोचने लगा, उसने अपने मसीही मित्र से कहा, "मैं बड़े ध्यान से आपके द्वारा पढ़े गये वचन को सुन रहा था, और मैं यह सोच रहा था कि सच में हमें हमारी माँ के गर्भ में कौन रचता है! इस पद को सुनकर मैं अब सोचने में मजबूर हो गया हूं," और उसी समय उसने परमेश्वर पर विश्वास कर अपने घुटने टेककर कहा, "मैंने अब यह जान लिया है कि ईश्वर है।" अब मसीही मित्र के लिए यह एक बहुत ही अच्छा अवसर था कि वह अपने उस नास्तिक मित्र को सुसमाचार बताकर प्रभु यीशु के पास लाए।

प्रभु यीशु पर विश्वास के द्वारा हम पापों की क्षमा पाते हैं। विश्वास के द्वारा हम परमेश्वर की सन्तान ठहराये जताए हैं। विश्वास से हम धर्मी ठहराये जाते हैं। विश्वास के द्वारा हम अनंत जीवन पाते हैं। विश्वास के द्वारा हम परमेश्वर की सारी आत्मिक आशीषों को प्राप्त करते हैं। जब हम परमेश्वर पर विश्वास करते हैं, तो परमेश्वर के द्वारा हम बड़े से बड़े खतरों से बचाए जाते हैं। इब्रानियों की पुस्तक से कुछ उदाहरणों को हम देखेंगे जो यह प्रमाणित करते हैं कि विश्वास करने से क्या होता है।

1. हाबिल - "अपने विश्वास के द्वारा वह अब तक बातें करता है" - परमेश्वर ने उसके और उसकी भेटों के विषय में गवाही दी, तथा उसके धर्मी होने की भी गवाही दी (इब्रानियों 11:4)।

2. हनोक - "हनोक परमेश्वर के साथ साथ चलता रहा, फिर वह लोप हो गया, क्योंकि परमेश्वर ने उसको उठा लिया।" हनोक ने यह विश्वास किया कि उसका परमेश्वर उसके सृष्टिकर्ता हैं। उसने परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन जीया, और परमेश्वर को उसने अपने विश्वास से प्रसन्न किया। हनोक अदृश्य परमेश्वर के साथ-साथ तीन सौ साल तक चलता रहा, और फिर वह चलते चलते अनंतकाल में प्रवेश कर गया। "और उसके उठा लिये जाने के पहले उसकी यह गवाही दी गई कि उसने परमेश्वर को प्रसन्न किया।"

प्रियो, विश्वास का जीवन हमेशा परमेश्वर को प्रसन्न करता है क्योंकि "विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है।" विश्वास ही एक ऐसी चीज है जो परमेश्वर को उसका उचित मान देती है, और मनुष्य को भी उसकी हैसियत में रखती है। विश्वास न सिर्फ यह प्रतीति करता है कि परमेश्वर का अस्तित्व है, परंतु यह भरोसा भी रखता है कि परमेश्वर अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है। प्रियो, परमेश्वर में ऐसा कुछ भी नहीं है कि मनुष्य उस पर विश्वास न रख सके। समस्या मनुष्य की स्व-इच्छा में है कि वह परमेश्वर पर विश्वास करे या न करे।

3. नूह - नूह का विश्वास परमेश्वर की इस चेतावनी पर आधारित था कि वह संसार को एक जलप्रलय के द्वारा नाश कर देगा (उत्पत्ति 6:1)। उस समय तक मनुष्य ने कभी भी जलप्रलय का अनुभव नहीं किया था। नूह ने परमेश्वर पर विश्वास किया, जब परमेश्वर ने नूह को जहाज बनाने की आज्ञा दी। परमेश्वर ने उससे कहा था, "मैं मनुष्य को जिसकी मैंने सृष्टि की है, पृथ्वी के ऊपर से मिटा दूँगा" (उत्पत्ति 6:7)। नूह ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और एक जहाज बनाया, और अपने परिवार सहित जहाज में सवार हुआ। नूह के विश्वास का प्रतिफल उसे मिला। उसे और उसके घराने को बचा लिया गया। उसके जीवन और गवाही के द्वारा संसार को दोषी ठहराया गया, और वह उस धर्म का वारिस हुआ जो विश्वास से प्राप्त होता है।

4. अब्राहम - अब्राहम कसदियों के ऊर नामक नगर में रहता था। वह मूर्तिपूजक पृष्ठभूमि से था, परंतु जिस समय परमेश्वर ने उसे दर्शन दिया और उसे अपने पिता के घर और देश को छोड़कर उस देश में जाने को कहा जिसे उसने अभी तक देखा भी नहीं था, तब वह परमेश्वर की आवाज को सुना और परमेश्वर पर

विश्वास करके उसने अपने घर और अपनी भूमि (अपने देश) को छोड़ दिया। वह नहीं जानता था कि किधर और कहाँ जाना है। परमेश्वर पर विश्वास के द्वारा उसे आशीष मिली। परमेश्वर ने उससे कहा, "तू आशीष का मूल होगा, भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे।" यहोवा के इस वचन के अनुसार अब्राहम विश्वास में चला (उत्पत्ति 12:1 - 4)। साथ ही साथ सारा के विषय में भी हम पाते हैं कि सारा ने आश्चर्यजनक रीति से नब्बे वर्ष की आयु में गर्भ धारण करने की सामर्थ पाई। बाइबल में स्पष्ट रुप से यह बताया गया है कि वह इतनी बूढ़ी हो चुकी थी कि वह गर्भधारण कर ही नहीं सकती थी। परंतु वह जानती थी कि परमेश्वर ने उसे संतान देने की प्रतिज्ञा दी है, और वह यह भी जानती थी कि परमेश्वर अपने वचन को वापस नहीं ले सकता (उत्पति 18:9)। उसे यह भरोसा था कि परमेश्वर ने जो प्रतिज्ञा की है उसे वे जरुर पूरी करेंगे, और जैसा परमेश्वर ने कहा था वह पूरा हुआ। उस समय अब्राहम की आयु 100 वर्ष और सारा की आयु 90 वर्ष की थी। यह उनके लिए एक असम्भव कार्य था, परंतु परमेश्वर से उन दोनों को माता और पिता बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ (उत्पत्ति 21: 1 - 3)।

साथ ही विश्वास के एक और सुंदर उदाहरण को हम देखते हैं, जो हमें उत्पत्ति 22:1 - 18 में मिलता है। हम अब्राहम के विश्वास की सबसे बड़ी जीत को देख सकते हैं। परमेश्वर ने अब्राहम से कहा कि वह अपने एकलौते पुत्र इसहाक को जिससे वह अत्यंत प्रेम रखता था, लेकर मोरिय्याह देश को चला जाये और वहाँ उसको एक पहाड़ पर जिसे परमेश्वर उसे बताएंगे, होमबलि करके चढ़ाये (उत्पत्ति 22:2)। यहां ध्यान देने योग्य बात यह है कि दोनों ही समय में, - पहले देश छोड़ने के समय में, और फिर इसहाक को बलिदान चढ़ाने के समय में, परमेश्वर ने अब्राहम से कहा था, "मैं तुझे बताऊंगा।" अब्राहम विश्वास के आधार पर चला। अब्राहम बेहिचक पूर्ण विश्वास और आज्ञाकारिता को दर्शाते हुए अपने कलेजे के टुकड़े - अपने सबसे प्रिय धन को परमेश्वर के सामने बलिदान करने को निकल पड़ा। अनगिनत सन्तानों की प्रतिज्ञा इसहाक के माध्यम से पूरी होने वाली थी, परंतु दुविधा यह थी कि यदि अब्राहम इसहाक को बलिदान करके चढ़ा देता है तो प्रतिज्ञा कैसे पूरी होगी, परंतु अब्राहम जानता था कि परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है और उसके लिये यही बात "सब कुछ" थी। अब्राहम इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि यदि परमेश्वर की दृष्टि में यह आवश्यक है कि वह अपने पुत्र इसहाक को बलिदान करे तो परमेश्वर उसके पुत्र को मरे हुओं में से जिला देगा, ताकि अपनी प्रतिज्ञा को पूरी करे। परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर अब्राहम के विश्वास ने उसे इस निष्कर्स पर पहुंचाया कि परमेश्वर को इसहाक को जीवित करना ही पड़ेगा। अब्राहम अपने पुत्र इसहाक को बलिदान चढ़ाने के लिए पूरी तरह से तैयार था। और जब इसहाक का बलिदान होने ही

वाला था, तभी परमेश्वर ने इस कार्य का श्रेय उसे दे दिया। परमेश्वर ने इसहाक के स्थान पर एक मेढ़े का प्रबंध किया! एकलौता पुत्र इसहाक अपने घर लौट आया! विश्वास का यह एक जबरदस्त उदाहरण है। प्रियो, परमेश्वर ने यह कभी नहीं चाहा था कि अब्राहम अपने पुत्र का बलिदान करे। परमेश्वर ने कभी भी अपने लोगों से नरबलि नहीं चाहा। उसने अब्राहम को परखा और उसे विश्वास में खरा पाया। अब्राहम ने अपने जीवन काल में कभी भी अविश्वासी होकर परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर संदेह नहीं किया, पर विश्वास में दृढ होकर परमेश्वर की महिमा की और यह जाना की जिस बात की परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरा करने को सामर्थी भी है (रोमियों 4:20 - 22)।

विश्वास के इन अद्भुत उदाहरणों के द्वारा प्रभु हमारे विश्वास को और भी ज्यादा मजबुती प्रदान करें।

परमेश्वर की दृष्टि में हमारा मूल्य! लूका 12:22-31

ज्योति साहू, राजनांदगांव (छ.ग.)

संसार में परमेश्वर ने केवल मनुष्य जाति के लिए अपने एकलौते पुत्र को भेजा, जो पुत्र उसकी नजर में अनमोल है, इसलिए परमेश्वर इस संसार में किसी भी चीज से अधिक मूल्य हमारी करते हैं। प्रभु यीशु ने कहा, "तुम्हारा मूल्य पक्षियों से कहीं अधिक है (मत्ती 6:26)! परमेश्वर की दृष्टि में सबसे अधिक मूल्य हमारा है।

परमेश्वर हमारा स्वर्गीय पिता है, जैसे एक सांसारिक पिता अपने बच्चों की आवश्यकतओं के साथ बंधा होता है वैसे वो भी हमारी जरूरतों को पूर्ण करने वाला पिता है।

प्रभु यीशु ने एक धनवान मूर्ख का दृष्टान्त बताया जिसमें, वह अपने ही विचारों में अपने प्राण से कहता है तेरे पास बहुत दिनों के लिए बहुत कुछ है इसलिए खा पी और सुख से रह (लूका 12:19)। यह एक ऐसा व्यक्ति था जिसे अपने भविष्य की चिंता नहीं थी, वास्तविक बात यही थी कि उसके पास उसके आने वाले दिनों के लिए बहुत कुछ था, पर वह ये नहीं जानता था कि उसके पास वो आने वाले दिन ही नहीं थे। जिस प्राण के भविष्य की बात वह सोच रहा था, प्रभु ने कहा, "वह प्राण उसी दिन उससे ले लिया जाएगा।"

आगे यीशु ने चेलों से कहा "इसलिये मैं तुम से कहता हूं, अपने प्राण की चिन्ता न करो, कि हम क्या खाएंगे; न अपने शरीर की कि क्या पहिनेंगे।

क्योंकि भोजन से प्राण, और वस्त्र से शरीर बढ़कर है।"

लूका 12:22,23

हमे हमेशा इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि भले ही आज हमारे पास कल के लिए कुछ न हो पर आज हमारे पास वो प्राण है, उस धनवान के पास आने वाले दिनों में अपने प्राण के लिए धन तो था पर आने वाले दिनों में उसके पास प्राण ही नहीं था। हमे हमेशा जैसे यीशु ने कहा प्राण भोजन से बढ़कर है, आज हमारे पास जीवन है इस बात पर ध्यान देने की आवश्यकता है, परमेश्वर ने हमे जीवित रखा है यह आज के लिए अधिक महत्वपूर्ण है। इसलिए हमें हमेशा आज के लिए धन्यवादी बने रहने की जरूरत है।

दूसरी बात जो यीशु ने वहाँ खड़े होकर कही वह यह थी कि उसने कुछ चीजों पर चेलों का ध्यान केंद्रित किया और वो थे- पक्षी, पेड़ और घास ये वे चीज है जिनके पास सिर्फ और सिर्फ एक ही स्वामी है अर्थात परमेश्वर, उनके पास यह चुनाव करने की सामर्थ नहीं है कि वो परमेश्वर के अलावा किसी और को अपने स्वमी के रूप में चयन करें जैसे हमारे पास है कि हम धन का चुनाव अपने स्वामी के रूप में कर लेते हैं, यीशु ने उन चीजों को उदाहरण में लाया जिनकी निर्भरता सौ प्रतिशत परमेश्वर पर है, परमेश्वर ही उन्हें देता है।

उनके पास विरोध करने की सामर्थ्य नहीं है जो परमेश्वर ने उन्हें करने की आज्ञा दी है वो उसे पूर्ण करते हैं, जैसे एक दास अपने स्वामी के प्रति वफादार रहता है बिल्कुल उसी प्रकार, अब अगर एक दास अपने स्वामी के प्रति वफादार रहता है तो उसका स्वामी भी उसे वो सब देता है जिसकी उसके दास को आवश्यकता है। बिल्कुल वैसे ही पक्षी, पेड़ और घास इत्यादि चीजें परमेश्वर की मर्जी पूर्ण करते हैं और परमेश्वर उनकी आवश्यकताओं को पूर्ण करता है। यीशु ने हमारा ध्यान उन पर केंद्रित किया अगर हम भी परमेश्वर के वफादार दास के समान उसकी मर्जी पूर्ण करते हैं तो दास को अपनी चिंता करने की आवश्यकता नहीं है उसका स्वामी अर्थात हमारा परमेश्वर हमारी सारी आवश्यकता को पूर्ण करने में विश्वासयोग्य है।

परन्तु उसके राज्य की खोज में रहो, तो ये वस्तुऐं भी तुम्हें मिल जाएंगी। (लूका 12:31)

कौवों पर ध्यान दो; वे न बोते हैं, न काटते; न उन के भण्डार और न खत्ता होता है; तौभी परमेश्वर उन्हें पालता है; तुम्हारा मूल्य पक्षियों से कहीं अधिक है। (लूका 12:24)

सोसनों के पेड़ों पर ध्यान करो कि वे कैसे बढ़ते हैं; वे न परिश्रम करते, न कातते हैं: तौभी मैं तुम से कहता हूं, कि सुलैमान भी, अपने सारे विभव में, उन में से किसी एक के समान वस्त्र पहिने हुए न था।
(लूका 12:27)

इसलिये यदि परमेश्वर मैदान की घास को जो आज है, और कल भाड़ में झोंकी जाएगी, ऐसा पहिनाता है; तो हे अल्प विश्वासियों, वह तुम्हें क्यों न पहिनाएगा? (लूका 12:28)

हमे ये बात हमेशा स्मरण रखनी चाहिए हो सकता है कि संसार में लोग भले हों और अच्छे विचारधाराओं

के हों पर उनके और हमारे लक्ष्य हमेशा अलग होते हैं जिन चीजों की खोज में वो रहते हैं हमें उनकी खोज करने की आवश्यकता नहीं है। हमारा लक्ष्य खुदा की मर्जी की खोज करना होता है संसार के लोगों की खोज में होते हैं तो अधिक धन और बड़ा पद, अगर हम भी इन्हीं चीजो की खोज में है तो हममे और उनमें कोई अंतर नहीं रह जाएगा, हमें परमेश्वर ने संसार से अलग किया है अब हमें फिर से अपनी मानसिकता संसार की तरह नहीं बनाना है

क्योंकि संसार की जातियां इन सब वस्तुओं की खोज में रहती हैं: और तुम्हारा पिता जानता है, कि तुम्हें इन वस्तुओं की आवश्यकता है। (लूका 12:30)

हमें जिन चीजों की आवश्यकता है हमारा स्वर्गीय पिता उन्हें हमसे बढ़कर जानता है, इसलिए हमारे लक्ष्य कभी भी सांसारिक नहीं होना चाहिए।

चिंता एक अविश्वास या अल्प विश्वास का परिणाम होता है जिसका आरम्भ हमारे मन में होता है, जब उस मूर्ख धनवान ने कुछ कहा तो वह मन में विचार करने लगा (लूका 12:17) जब एक फरीसी और चुंगी लेने वाला मंदिर में दुवाएँ कर रहे थे तब फरीसी मन में दुवा कर रहा था (लूका 18:11) जब यीशु ने व्यभिचार के विषय में शिक्षा दी तो वह मन की बात करता है कि तुम सुन चुके हो कि व्यभिचार न करना पर मैं तुमसे कहता हूँ कि अगर कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले तो वह व्यभिचार कर चुका (लूका 5:28) यीशु ने बार बार मन के विचारों को प्रगट किया और उसे बिल्कुल कार्यों के समान बताया।
परमेश्वर की नजरों में हमारे विचार और हमारे कार्य एक समान है, हमारे विचारों का न्याय भी बिल्कुल वैसा ही होगा जैसे हमारे कार्यो का।
मेरे बारे में
प्रभु मेरी सहायता करें कि मैं उन बातों पर ध्यान दूँ जहाँ वो चाहता है कि मैं ध्यान दूँ।

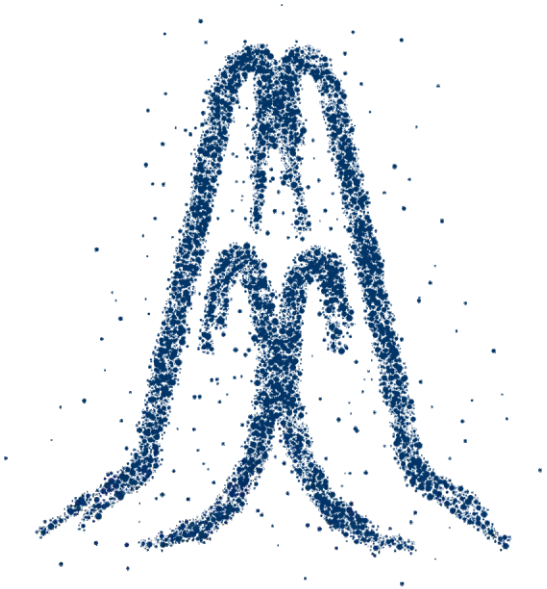

एक मसीही पत्रिका

सांत्वना